नंद कुमार
आई.ए.एस.
सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शास. पत्र क्र. DO-1190/PA/20/2010
फोन नं. : 0771-4080553, 2221248
फैक्स नं. : 0771-2221230
ई-मेल : nand41@yahoo.com
छत्तीसगढ़ शासन
मंत्रालय
दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर - 492 001

दिनांक : 26-05-2010

विषयः–छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अभिनव प्रयोग ।

—0—

विभिन्न शिक्षा आयोग, शिक्षा समितियॉ, शिक्षाविद् और हमारे महापुरूष समय–समय पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन एवं शिक्षा वस्तु को बदलने का प्रयास करते रहे हैं । उनके चिंतन और निष्कर्षों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा संबंधी सिफारिशें एवं निर्देश मिलते रहे हैं । पिछले एक दशक में एन.सी.ई.आर.टी., ए.आई.सी.टी.ई., यू.जी.सी. एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थाएं मूल्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय शिक्षा को विभिन्न पाठ्यकमों में शामिल करने पर जोर दे रहीं हैं । कारण स्पष्ट है कि शिक्षा का संस्थागत ढांचा एवं अध्ययन वस्तु मानवीय मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन, सामाजिक सरोकारों के प्रति निष्ठा, राष्ट्रीय चरित्र को बनाए रखने में सफलता नहीं हुई । यह भी सर्वविदित है कि परिवार एवं समाज टूट रहे हैं, मूल्यहीनता बढ़ने की चिंता सभी लोग व्यक्त करते हैं । भौतिकवादी प्रवृत्तियॉ समाज में पसर रही है । प्राकृतिक असंतुलन एवं पर्यावरणीय प्रदूषण की चिन्ता सर्वविदित है ।

प्रशासनिक सेवाओं में मेरा ज्यादातर कार्यकाल शिक्षा दायित्वों से संबंधित रहा । अतः स्वाभाविक रूप से उपरोक्त चिन्ताऍ मुझे प्रचलित शिक्षा के विकल्प पर विचार करने के लिए विवश करती रही । छत्तीसगढ़ में संयोग से मैं 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के प्रस्ताव से अवगत हुआ जो "अमरकंटक मध्यप्रदेश के श्री ए. नागराज के 25 वर्षों के दीर्घकालीन शोध एवं अनुसंधान 'अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन–मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' के आधार पर तैयार किया गया था ।

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान, श्री सोमदेव त्यागी–9301700400, श्री योगेश शास्त्री 09303040188, श्री अंजनी अग्रवाल–09300205129 ग्राम अछोटी, ब्लाक मुरमुंदा जिला दुर्ग) द्वारा तैयार यह प्रस्ताव पूर्णतः धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय आधारित शिक्षा से मुक्त और अस्तित्व, सहअस्तित्व, प्रकृति और व्यवस्था संबंधी किया कलापों, अन्तर्कियाओं व अंतर्संबंधों पर आधारित था ।

मैंने सात दिवसीय शिविर दो वर्षों के अध्ययन में पाया कि यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज प्रकृति व अस्तित्व में परस्पर अन्तर्संबंधों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है । सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर ऐसा लगता है कि समाज के सोच की ऊंचाई थोड़ी और बढ़ जाने के बाद यह प्रचलित शिक्षा का एक विकल्प हो सकता है । यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों एवं मार्गदर्शक तत्वों के भी अनुरूप है ।

इसी कम में छत्तीसगढ़ राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के कक्षा पहली से दसवीं तक के लिए 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यकम तैयार कराए गए और राज्य के सभी विद्यालयों में एक अनिवार्य पीरियड का प्रावधान इसके अध्यापन के लिए किया गया । अध्यापन के लिए पाठ्यपुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री को मानवीय शिक्षा शोध संस्थान एवं एस.सी.ई.आर.टी. (श्री के.के. साहू, 09425230200) द्वारा तैयार की गयी । अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने लगभग 20 हजार शिक्षकों और अधिकारियों का 7 से 10 दिन (50 से 60 घंटे) का प्रशिक्षण कराया गया । लगभग 50 शिक्षकों को इस आशय के साथ दीर्घकालीन (छह माह) प्रशिक्षण कराया गया ताकि वे जिला स्तर पर राज्य के अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में सक्षम हो

सकें । एक कार्ययोजना भी तैयार की गई जिसके तहत राज्य के सभी दो लाख शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का एक वर्षीय प्रशिक्षण दिलाया जा सके । यह यौजना चार वर्ष में पूर्ण होगी । भविष्य में शिक्षकों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए राज्य के 20 डाईट केन्द्रों में डी.एड. की 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई हैं ।

इससे पूर्व भी आई.आई.टी. (कानपुर, दिल्ली), आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, उत्तरप्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, सोमैया विद्याविहार, मुम्बई आदि शिक्षण संस्थाएं मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद (जीवन विद्या) पर आधारित पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहे हैं । जिनके फीडबैक भी उत्साहित करने वाले हैं ।

इस प्रशिक्षण का मुझ पर एवं शिक्षकों पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । सभी में स्वयंस्फूर्त परिवर्तन प्रवृत्तियां देखी गई हैं। शिक्षक के आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है । यह प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन एवं पर्यावरणीय चेतना के विकास में भी सहायक साबित हो रहा है । विद्यार्थियों में इससे तर्कशीलता, मौलिक चिंतन प्रवृत्ति, प्रमाण आधारित सोच और सार्वभौमिक नियमों/सिद्धांतों के प्रति निष्ठा को भी देखा गया है । इस संबंध में विस्तृत रिपोर्ट छत्तीसगढ़ एस.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट(http://scert.cg.gov.in/) में अपलोड की गई है ।

प्रत्येक राज्य के शिक्षा विभाग इस प्रयोग का अवलोकन कर सकते हैं । इसके लिए विभाग/विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की 7 दिवसीय परिचयात्मक शिविर आयोजित करना होगा । शिविर आयोजन अथवा अतिरिक्त जानकारी के लिए अधोहस्ताक्षरित अथवा पत्र में दर्शित फोन अथवा ई–मेल पर संपर्क किया जा सकता है। आपका राज्य/विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़े इसी आशा एवं अपेक्षा के साथ।

भवदीय

नंद कुमार

(नंदकुमार)
nand41@yahoo.com
No. - 09425507116

प्रति,

श्री.....

दिव्य पथ संस्थान
अमरकंटक
जि. अनुपपूर
मध्यप्रदेश

नंद कुमार
आई.ए.एस.
सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शास. पत्र क्र. : DO-1190/PA/20/2010
फोन नं. : 0771-4080553, 2221248
फैक्स नं. : 0771-2221230
ई-मेल : nand41@yahoo.com
छत्तीसगढ़ शासन
मंत्रालय
दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर - 492 001

दिनांक : 26-05-2010

विषयः—छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अभिनव प्रयोग ।

—0—

विभिन्न शिक्षा आयोग, शिक्षा समितियॉ, शिक्षाविद् और हमारे महापुरूष समय—समय पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन एवं शिक्षा वस्तु को बदलने का प्रयास करते रहे हैं । उनके चिंतन और निष्कर्षों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा संबंधी सिफारिशें एवं निर्देश मिलते रहे हैं । पिछले एक दशक में एन.सी.ई.आर.टी., ए.आई.सी.टी.ई., यू.जी.सी. एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थाएं मूल्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय शिक्षा को विभिन्न पाठ्यकमों में शामिल करने पर जोर दे रहीं हैं । कारण स्पष्ट है कि शिक्षा का संस्थागत ढांचा एवं अध्ययन वस्तु मानवीय मूल्यों के संरक्षण—संवर्धन, सामाजिक सरोकारों के प्रति निष्ठा, राष्ट्रीय चरित्र को बनाए रखने में सफलता नहीं हुई । यह भी सर्वविदित है कि परिवार एवं समाज टूट रहे हैं, मूल्यहीनता बढ़ने की चिंता सभी लोग व्यक्त करते हैं । भौतिकवादी प्रवृत्तियॉ समाज में पसर रही है । प्राकृतिक असंतुलन एवं पर्यावरणीय प्रदूषण की चिन्ता सर्वविदित है ।

प्रशासनिक सेवाओं में मेरा ज्यादातर कार्यकाल शिक्षा दायित्वों से संबंधित रहा । अतः स्वाभाविक रूप से उपरोक्त चिन्ताएॅ मुझे प्रचलित शिक्षा के विकल्प पर विचार करने के लिए विवश करती रही । छत्तीसगढ़ में संयोग से मैं 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के प्रस्ताव से अवगत हुआ जो ''अमरकंटक मध्यप्रदेश के श्री ए. नागराज के 25 वर्षों के दीर्घकालीन शोध एवं अनुसंधान 'अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन—मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' के आधार पर तैयार किया गया था ।

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान, श्री सोमदेव त्यागी—9301700400, श्री योगेश शास्त्री 09303040188, श्री अंजनी अग्रवाल—09300205129 ग्राम अछोटी, ब्लाक मुरमुंदा जिला दुर्ग) द्वारा तैयार यह प्रस्ताव पूर्णतः धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय आधारित शिक्षा से मुक्त और अस्तित्व, सहअस्तित्व, प्रकृति और व्यवस्था संबंधी किया कलापों, अन्तर्कियाओं व अंतर्सबंधों पर आधारित था ।

मैंने सात दिवसीय शिविर दो वर्षों के अध्ययन में पाया कि यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज प्रकृति व अस्तित्व में परस्पर अन्तर्सबंधों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है । सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर ऐसा लगता है कि समाज के सोच की ऊंचाई थोड़ी और बढ़ जाने के बाद यह प्रचलित शिक्षा का एक विकल्प हो सकता है । यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों एवं मार्गदर्शक तत्वों के भी अनुरूप है ।

इसी कम में छत्तीसगढ़ राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के कक्षा पहली से दसवीं तक के लिए 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यकम तैयार कराए गए और राज्य के सभी विद्यालयों में एक अनिवार्य पीरियड का प्रावधान इसके अध्यापन के लिए किया गया । अध्यापन के लिए पाठ्यपुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री को मानवीय शिक्षा शोध संस्थान एवं एस.सी.ई.आर.टी. (श्री के.के. साहू, 09425230200) द्वारा तैयार की गयी । अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने लगभग 20 हजार शिक्षकों और अधिकारियों का 7 से 10 दिन (50 से 60 घंटे) का प्रशिक्षण कराया गया । लगभग 50 शिक्षकों को इस आशय के साथ दीर्घकालीन (छह माह) प्रशिक्षण कराया गया ताकि वे जिला स्तर पर राज्य के अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में सक्षम हो

सकें । एक कार्ययोजना भी तैयार की गई जिसके तहत राज्य के सभी दो लाख शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का एक वर्षीय प्रशिक्षण दिलाया जा सके । यह योजना चार वर्ष में पूर्ण होगी । भविष्य में शिक्षकों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए राज्य के 20 डाईट केन्द्रों में डी.एड. की 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई हैं ।

इससे पूर्व भी आई.आई.टी. (कानपुर, दिल्ली), आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, उत्तरप्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, सोमैया विद्याविहार, मुम्बई आदि शिक्षण संस्थाएं मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद (जीवन विद्या) पर आधारित पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहे हैं । जिनके फीडबैक भी उत्साहित करने वाले हैं ।

इस प्रशिक्षण का मुझ पर एवं शिक्षकों पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । सभी में स्वयंस्फूर्त परिवर्तन प्रवृत्तियां देखी गई हैं। शिक्षक के आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है । यह प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन एवं पर्यावरणीय चेतना के विकास में भी सहायक साबित हो रहा है । विद्यार्थियों में इससे तर्कशीलता, मौलिक चिंतन प्रवृत्ति, प्रमाण आधारित सोच और सार्वभौमिक नियमों/सिद्धांतों के प्रति निष्ठा को भी देखा गया है । इस संबंध में विस्तृत रिपोर्ट छत्तीसगढ़ एस.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट(http://scert.cg.gov.in/) में अपलोड की गई है ।

प्रत्येक राज्य के शिक्षा विभाग इस प्रयोग का अवलोकन कर सकते हैं । इसके लिए विभाग/विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की 7 दिवसीय परिचयात्मक शिविर आयोजित करना होगा । शिविर आयोजन अथवा अतिरिक्त जानकारी के लिए अधोहस्ताक्षरित अथवा पत्र में दर्शित फोन अथवा ई–मेल पर संपर्क किया जा सकता है। आपका राज्य/विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़े इसी आशा एवं अपेक्षा के साथ।

भवदीय

(नंदकुमार)
nand41@yahoo.com
No. - 09425507116

प्रति,

श्री.....